Toppersnotes
Unleash the topper in you

MP - SET

राजनीति विज्ञान

Madhya Pradesh State Eligibility Test

पेपर 2 || भाग – 1

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	इकाई - I - राजनीतिक सिद्धांत	
1.	न्याय (Justice)	1
2.	स्वतंत्रता (Liberty)	20
3.	समानता (Equality)	23
4.	शक्ति (Power)	31
5.	राजनीति विज्ञान (Political Science) (परम्परागत व आधुनिक उपागम)	38
6.	राजनीतिक सिद्धांत व उपयोगिता	41
7.	लोकतंत्र (Democracy)	55
8.	लोकतंत्रीकरण (Democratization)	66
9.	अनुदारवाद/रूढ़िवाद (Conservatism)	66
10.	नागरिकता [Citizenship]	73
11.	नारीवाद (Feminism)	80
12.	राजनीतिक सिद्धांतों का पतन व उत्थान (Political Theories: Decay and Revival)	87
13.	उदारवाद (Liberalism)	91
14.	मार्क्सवाद (Marxism)	94
15.	समाजवाद (Socialism)	96
	इकाई - II - राजनीतिक विचारक	
1.	कन्फ्यूशियस	100
2.	प्लेटो	126
3.	अरस्तु (Aristotle)	133
4.	कार्ल मार्क्स	144
5.	जॉन स्टुअर्ट मिल (J.S. Mill)	164
6.	बेंथम	173
7.	मैकियावली	178
8.	हॉब्स	184
9.	जॉन लॉक	190
10.	जीन जैक्स रूसो	197

I UNIT राजनीतिक सिद्धांत

न्याय (Iustice)

- Justice - यह शब्द लैटिन भाषा के Justia से बना है, जिसका अभिप्राय है- 'जोड़ना'।
- भारतीय दर्शन में इसका पर्यायवाची शब्द 'धर्म' है,
- जबकि ग्रीक दर्शन में 'सद्‌गुण' या 'सद्‌गुणी व्यक्ति' था।
- जैसा कि पॉपर ने कहा है, "न्याय एक ऐसा लबादा है जिसके कोई एक निश्चित निहितार्थ नहीं हैं।"
- समकालीन युग में न्याय का मूल अर्थ 'सामाजिक न्याय' से लिया जाता है।

न्याय के विविध आयाम

- **वितरणात्मक न्याय (Distributive)**
  - ✓ इसके अन्तर्गत पद, प्रतिष्ठा, धन, सम्पदा आदि का वितरण आता है, यानि सामाजिक व आर्थिक संसाधनों का वितरण। इस न्याय का सर्वप्रथम प्रयोग अरस्तु द्वारा किया गया। अरस्तु के वितरणात्मक न्याय का अर्थ है- राज्य व्यक्ति की योग्यता के अनुसार संसाधन वितरित करे।
  - ✓ ज्यादा योग्य (ज्यादा क्षमता) -> ज्यादा संसाधन

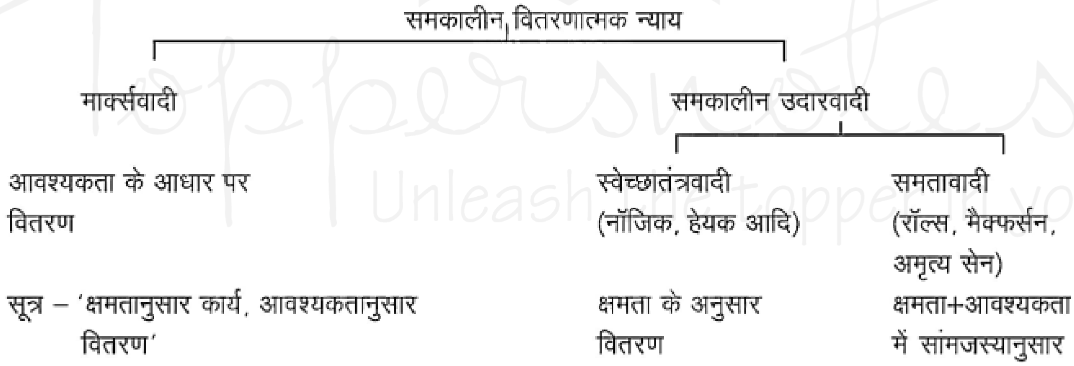

- **समानुपातिक/आनुपातिक न्याय**
  - ✓ सर्वप्रथम अरस्तु द्वारा वर्णित।
  - ✓ सूत्र: "समान लोगों के साथ समान व्यवहार, असमान लोगों के साथ असमान व्यवहार"।
  - ✓ यानि - योग्यता, क्षमता के अनुपात में पद, प्रतिष्ठा, धन, सम्पदा का वितरण। अरस्तु के अनुसार योग्यता का मापदण्ड 'सद्‌गुण' है।
- **प्रक्रियात्मक न्याय व तात्विक न्याय**
- **प्रक्रियात्मक न्याय**
  - ✓ इसके अन्तर्गत वैधानिक व राजनीतिक न्याय आते हैं। यह औपचारिक न्याय है जिसमें प्रक्रिया (Procedure) महत्वपूर्ण है, परिणाम नहीं। यानि, मूल्यवान वस्तुओं, सेवाओं, पदों, सम्पदा आदि के आवंटन/वितरण की प्रक्रिया या विधि निष्पक्ष होनी चाहिए। इसमें प्रक्रिया पर बल दिया जाता है, परिणाम पर नहीं। प्रक्रियात्मक न्याय में 'संसाधन वितरण' का एक मात्र आधार क्षमता/योग्यता है। जो ज्यादा योग्य होगा, उसे ज्यादा संसाधन मिलेगें, कम योग्य को कम संसाधन।
  - ✓ **समर्थक:** परम्परागत उदारवादी लॉक, स्पेन्सर, एडम स्मिथ, स्वेच्छातंत्रवादी नॉजिक, हेयक, बर्लिन, फ्रीडमैन।

- **तात्विक न्याय (Substantive Justice)**
  - ✓ इसका सम्बंध सामाजिक व आर्थिक न्याय से है। यह परिणामों को महत्वपूर्ण मानता है, यानि अच्छे परिणाम प्राप्त करने, दलितों, मजदूरों, गरीबों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रक्रिया से छेड़छाड़ की जा सकती है। तात्विक न्याय में व्यक्ति की मूलभूत आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयत्न किया जाता है, यानि यह संकल्पना 'अवसर की समानता' पर आधारित है।
  - ✓ **समर्थक विचारधाराएँ**: मार्क्सवादी यह तात्विक न्याय की क्रांतिकारी संकल्पना में विश्वास करते हैं। मार्क्सवादियों/साम्यवादियों के अनुसार न्याय का अभिप्राय है- पूंजीवादी व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन तथा उत्पादन के साधनों पर समाज का नियंत्रण, निजी पूंजी का उन्मूलन। आधुनिक उदारवादी तथा समतावादी जो कल्याणकारी राज्य का समर्थन करते हैं, प्रक्रियात्मक न्याय व तात्विक न्याय के सम्मिश्रण पर बल देते हैं।
- **प्राकृतिक न्याय**
  - ✓ प्राकृतिक न्याय में वे नियम व मान्यताएँ आती हैं, जो मानव मात्र के लिए उपयोगी होती हैं तथा जिनका पता व्यक्ति अपने विवेक से कर सकता है। हो सकता है उनका वर्णन संविधान या विधि में न हो।
  - ✓ **उदाहरण:**

    (A) कोई भी व्यक्ति स्वयं के मामले में न्यायधीश नहीं होगा।

    (B) किसी भी व्यक्ति को बिना सुनवाई के दण्डित नहीं किया **जाएगा**। यानि प्रत्येक व्यक्ति को सुनवाई का अधिकार होगा।

    (C) दण्ड तार्किक व उचित होना चाहिए, मनमाना नहीं।

<u>विभिन्न विचारकों के न्याय सम्बन्धित विचार</u>

<u>प्लेटो: नैतिक न्याय का सिद्धांत</u>

- प्लेटो की पुस्तक **Republic** का उपशीर्षक ही है- Concerning Justice। प्लेटो के न्याय सिद्धांत को 'श्रम विभाजन' या 'कार्य के विशेषीकरण' का सिद्धांत कहा जाता है। जिसका तात्पर्य है- प्रत्येक वर्ग अपना कार्य करे और दूसरे वर्ग के कार्यों में हस्तक्षेप न करे।
  - ✓ **न्याय के दो प्रकार:** व्यक्तिगत, सामाजिक/राजनीतिक न्याय (व्यक्तिगत न्याय मानवीय आत्मा का गुण है)।

अरस्तु

- अरस्तु
  - सम्पूर्ण न्याय
    - यह प्लेटो वाला सामाजिक नैतिकता वाला न्याय है
    - अरस्तु–सम्पूर्ण न्याय के लिए सात्विकता (Righteousness) शब्द का प्रयोग करता है।
  - विशेष न्याय
    - वितरणात्मक न्याय
      - –विधायिका का विचार क्षेत्र
      - – सम्मान, धन सम्पदा व पदों का वितरण
      - – वितरण का आधार– योग्यता/सद्गुण
      - – समानुपातिक/आनुपातिक न्याय
      - – रेखागणित सूत्र
    - प्रतिवर्ती या संशोध–नात्मक न्याय
      - न्यायपालिका के क्षेत्र
      - अपराध व लेन–देन नियमन
      - सबके साथ समान व्यवहार
      - अंकगणितीय सूत्र

- ➢ अरस्तु के न्याय का सूत्र है- वितरणात्मक न्याय का सूत्र।
- ➢ राज्य व्यक्ति का ही वृहद्रूप है।
- ➢ एक व्यक्ति, एक कर्तव्य, एक वर्ग-एक कार्य के रूप में न्याय
- ➢ "समानों के साथ समानता का व असमानों के साथ असमानता का व्यवहार"
- ➢ आनुपातिक न्याय का तात्पर्य है जो जिस मात्रा में राज्य की सेवा करे या जो जिस मात्रा में 'सद्गुणी' है, उसी अनुपात में सम्मान, धन, पदों का वितरण। अरस्तु विशेष न्याय के दोनों क्षेत्रों में 'यथास्थिति का समर्थक' (Statusquo) है। यानि न्याय के क्षेत्र में अरस्तु के विचार 'रूढ़िवादी' हैं।

मध्यकालीन न्याय

- ➢ **सेन्ट ऑगस्टाइन (Book- City of God):** "व्यक्ति द्वारा ईश्वरीय राज्य के प्रति कर्त्तव्य पालन ही न्याय है", "जिन राज्यों में न्याय नहीं वे केवल चोर-**उचक्कों** की **खरीद-फरोख्त** है"।
- ➢ **थॉमस एक्वीनास (सुम्मा थियोलॉजिया):** समानता न्याय का मौलिक **गुण** है।

आधुनिक न्याय

- ➢ डेविड ह्यूम, बेन्थम, J.S. मिल के अनुसार न्याय का अर्थ नियमों का पालन है, क्योंकि नियमों की सार्वजनिक उपयोगिता है। **अधिकतम** लोगों का **अधिकतम** सुख ही न्याय का आधार है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

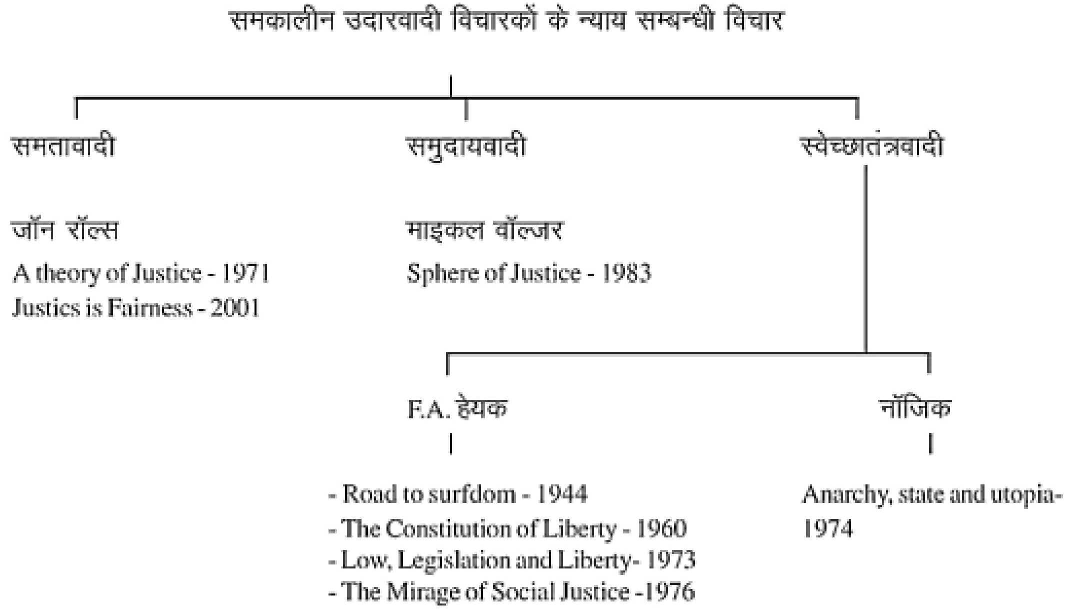

अमर्त्य सेन

- **पुस्तकें:**
  - ✓ Idea of Justice - 2009
  - ✓ Development as Freedom - 1999
  - ✓ The Argumentative Indian
  - ✓ Idea of India - 1997 (सुनील खिलनानी)
  - ✓ The Rediscovery of India - 2009 (मेघनाथ देसाई)
  - ✓ India: from midnight to millennium - शशि थरूर
  - ✓ India After Independence - बिपिन चन्द्रा
- **मुख्य कृतियाँ (Repeat):**
  - ✓ A theory of Justice - 1971 - जॉन रॉल्स
  - ✓ Anarchy, State and Utopia - 1974 - नॉजिक
  - ✓ The Mirage of Social Justice - 1976 – हेयक
  - ✓ Spheres of Justice - 1983 - वाल्जर
  - ✓ Idea of Justice - 2009 - अमृत्य सेन

जॉन रॉल्स (1921-2002)

- उदार समतावादी।
- जॉन रॉल्स USA के हावर्ड विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर थे।
- रॉल्स का न्याय सिद्धांत USA में 1960 के दशक में चले 'नागरिक अधिकार आन्दोलन' व नृजातीय संघर्ष की **पृष्ठभूमि** में उभरा। रॉल्स न्याय को समाज का मुख्य व 'प्राथमिक सद्गुण' मानता है।
- जॉन रॉल्स प्रक्रियात्मक न्याय व तात्विक न्याय को मिला देता है।
- न्याय की समस्या मूलतः प्राथमिक वस्तुओं के वितरण की समस्या है।

जॉन रॉल्स

- प्रभाव
  - लॉक, काण्ट – समर्थन
  - बेन्थम – विरोध
- विभिन्न नाम
  - शुद्ध प्रक्रियात्मक सिद्धांत
  - न्याय का सामाजिक समझौता सिद्धांत
  - न्याय का वितरणात्मक सिद्धांत
  - अन्तर के सूत्र का सिद्धांत
  - क्षतिपूर्ति का सिद्धांत
- न्याय के नियम/ न्याय के उचित क्षेत्र
  - (i) समान स्वतंत्रता का नियम
  - (ii) अवसर की समानता का नियम
  - (iii) तर्क संगत भेदभाव का नियम
- विशेषताएँ
  - (i) प्रगति व न्याय में से न्याय समर्थन
  - (ii) प्रगति+हस्तांतरण

प्रभाव: अज्ञान का पर्दा (As a Tabula Rasa)

➢ **लॉक:**

✓ रॉल्स द्वारा 'मूल स्थिति की संकल्पना', 'अज्ञान का पर्दा' (veil of Ignorance) तथा 'विवेकशील वार्ताकार' आदि संकल्पनाएँ लॉक की सामाजिक समझौता से पूर्व वाली 'प्राकृतिक स्थिति' से ली गयी हैं।

✓ रॉल्स ने सामाजिक समझौते को आधार बनाकर उदारवादी व्यक्तिवाद को पुनर्वितरण व सामाजिक न्याय के साथ जोड़ दिया।

✓ अज्ञान के पर्दे में उन्हें अपनी नस्ल, लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, धर्म का ज्ञान नहीं होता।

✓ पक्षकार अच्छे (Good) की अपनी अवधारणा व अपनी विशिष्ट मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों को भी नहीं जानते।

➢ **कांट:**

✓ रॉल्स, कांट से 'नैतिकता' तथा 'व्यक्ति की गरिमा' का विचार ग्रहण करता है

✓ रॉल्स के प्रसिद्ध वाक्य 'उचित, शुभ से **पहले** है' (the right is Prior to the Good), 'अधिकार, शुभ से **पहले** है', 'आत्मन, साध्य से **पहले** है'।

✓ ये दोनों वाक्य काण्ट की प्रसिद्ध मान्यता 'व्यक्ति, स्वयं में साध्य है' से प्रभावित हैं। रॉल्स का आधार कांट की 'नैतिक आधारभूत उदारवादी मान्यताएँ' हैं। रॉल्स कांट की विवेकशील बौद्धिकता से प्रभावित है, न कि डेविड ह्यूम की भावनात्मक बौद्धिकता से।

➢ **बेन्थम:**

✓ रॉल्स, बेन्थम के **उपयोगितावाद** का कट्टर आलोचक है, क्योंकि यह प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा पर ध्यान नहीं देता, जबकि गरिमा रॉल्स की न्याय प्रणाली का केन्द्र बिन्दु है।

✓ बेन्थम के **उपयोगितावाद** का सूत्र '**अधिकतम** लोगों का **अधिकतम** सुख' का निष्कर्ष यह निकलता है कि अगर 51% लोग दास प्रथा से सुखी हैं तो दास प्रथा उचित है।

✓ जबकि रॉल्स की न्याय व्यवस्था के अनुसार, 'सुखी लोगों के सुख को चाहे कितना ही क्यों न बढ़ा **दें**, उससे दुखी लोगों के दुख का हिसाब बराबर नहीं किया जा सकता'।

ToppersNotes Unleash the topper in you

रॉल्स के न्याय सिद्धांत के विभिन्न नाम

- **शुद्ध प्रक्रियात्मक न्याय:** अपने न्याय सिद्धांत को यह नाम स्वयं रॉल्स देता है। इसका **तात्पर्य** है- प्रक्रियात्मक न्याय + तात्विक न्याय दोनों का समन्वय। अर्थात योग्यता और क्षमता का सम्मान भी जरूरी तथा सामाजिक न्याय के लिए आरक्षण भी जरूरी। इस प्रकार रॉल्स पूंजीवादी नहीं, बल्कि कल्याणकारी राज्य का समर्थक है।
- **न्याय का अनुबंधमूलक या सामाजिक समझौता सिद्धांत:** क्योंकि लॉक की प्राकृतिक अवस्था से रॉल्स की मूल स्थिति की संकल्पना साम्य रखती है।
- **न्याय का वितरणात्मक सिद्धांत:** क्योंकि सभी व्यक्तियों को राज्य द्वारा मूलभूत आवश्यकता पूर्ति हेतु प्राथमिक वस्तुओं का वितरण किया जाता है।
  - ✓ **प्राथमिक वस्तुएँ (Primary Goods):** अधिकार व स्वतंत्रताएँ, आय व सम्पदा, शक्तियां व अवसर, आत्म-सम्मान।
- **'अन्तर के सूत्र' या विभेदों का सिद्धांत (Maximin Principle):** विभेद का आधार '**हीनतम** स्थिति वाले व्यक्ति को **अधिकतम** लाभ' है।
- **क्षतिपूर्ति का सिद्धांत:** यानि **हीनतम** स्थिति वाले लोगों के सामाजिक कल्याण हेतु सकारात्मक कार्यवाही (USA) / आरक्षण (India) / संरक्षणात्मक भेदभाव का समर्थन।

न्याय के नियम

- **दो नियम: पहला स्वतंत्रता से सम्बन्धित, दूसरा समानता से।**
  1. **समान स्वतंत्रता का नियम:** यह पहली प्राथमिकता है। (नागरिक व राजनीतिक स्वतंत्रता)। प्रथम नियम: शुभ की अपेक्षा अधिकार महत्वपूर्ण है।
  2. **आर्थिक सामाजिक विषमता (भिन्नता का सिद्धांत):** इसकी व्यवस्था दो आधारों पर होती है। यह आय व धन के वितरण पर लागू होती है।

     (अ) अवसर की समानता का नियम: यह दूसरी प्राथमिकता है।

     (ब) तर्कसंगत भेदभाव का नियम: यह तीसरी प्राथमिकता है। इसका तात्पर्य है हीन स्थिति वाले व्यक्तियों के कल्याण हेतु आरक्षण की व्यवस्था या सकारात्मक भेदभाव।
- उपर्युक्त तीनों नियम क्रमानुसार अपनाने हैं। इसे ही **रॉल्स** "न्याय के उचित क्षेत्र" की संज्ञा देता है।
- **शब्दकोशीय** व्यवस्था (Lexical order): अर्थात जब तक न्याय का प्रथम नियम तुष्ट नहीं होता, दूसरे तक नहीं पहुँचा जा सकता।
- अज्ञान के पर्दे के पीछे जो मूल स्थिति है, उस मूल स्थिति में जो सामाजिक खेल है, उसमें शामिल खिलाड़ी भी 'विवेकपूर्ण चयन' या खास पद्धितिगत सौदे बाजी करते हैं, फिर भी निष्कर्ष नैतिक निकलते हैं। इसका कारण है अज्ञान का पर्दा, क्योंकि खिलाड़ियों के पास सिर्फ सामान्य जानकारी है, न कि अपने बारे में विशिष्ट जानकारी, अतः वे पक्षपाती या स्वार्थी नहीं होते।

रॉल्स के न्याय सिद्धांत की विशेषताएँ

1. प्रगति व न्याय द्वन्द्व में न्याय का समर्थन:

- ✓ न्याय का तात्पर्य है – सामाजिक न्याय, यानि पिछड़े व हीन वर्ग के उत्थान के लिए आरक्षण का समर्थन।
- ✓ **सामाजिक कल्याण से सम्बन्धित – 'जंजीर या श्रृंखला सिद्धांत' (Chain Connection Theory):** जॉन रॉल्स का प्रसिद्ध कथन है, 'कोई भी समाज जंजीर के समान होता है और कोई भी जंजीर अपनी सबसे कमजोर कड़ी से मजबूत नही होती'।
- ✓ इस तर्क का सार यह है कि अधिक प्रतिभाशाली लोग कम प्रतिभाशाली लोगों के साथ मिलकर ही अपनी प्रतिभा व अवसरों का लाभ उठा सकते हैं।

2. **प्रगति के साथ हस्तांतरण शाखा पर भी बल:**
   - ✓ जॉन रॉल्स समाज में प्रगति के लिए पूँजीवादी प्रणाली तथा पिछड़ों के कल्याण हेतु हस्तांतरण शाखा का समर्थन करता है। यह शाखा गरीबों की न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करेगी। उदा. मनरेगा, RTE, उचित मूल्य की दुकानें।

आलोचना

आलोचना

- **मार्क्सवादी**
  - – रॉल्स पूंजीवादी का समर्थक
- **स्वेच्छातंत्रवादी**
  - – रॉल्स–समानता पर अत्यधिक बल देकर आर्थिक स्वतंत्रता की अवहेलना करता है।
  - – औपचारिक/प्रक्रियात्मक/नकारात्मक न्याय का समर्थन स्वेच्छातंत्रवादियों द्वारा
- **समुदायवादी**
  - – रॉल्स, सामान्य शुभ (Common Good) को नहीं अपनाता
  - – सैंडल – Limites of Justice न्याय नहीं भातृत्व प्रथम सद्गुण
- **अमृत्य सेन**
  - 1.Book Idea of Justic
  - 2. - Argumente-tive Indians

- "रॉल्स बांसुरी तो सबको देता है पर बजाना किसी को नहीं सिखाता" – सेन यानि 'क्षमता विकास' के रूप में न्याय की अवहेलना करता है।
- **वामपंथी समतावादी (C.B. मेक्फर्सन):** ने रॉल्स की आलोचना कर उसे 'उदार लोकतांत्रिक पूंजीवादी कल्याणकारी राज्य का प्रवक्ता बताया'।

माइकल वाल्जर का न्याय सिद्धांत: समुदायवादी

- Spheres of Justice - 1983
- वाल्जर के अनुसार 'न्याय का कोई सार्वभौमिक नियम नहीं' हो सकता।
- सामाजिक न्याय, राजनीतिक न्याय, आर्थिक न्याय के लिए अलग-अलग नियम बनाने होंगे, जबकि जॉन रॉल्स सभी क्षेत्रों के न्याय का एक ही नियम लागू करता है।
- इस प्रकार वाल्जर 'बहुलवादी न्याय क्षेत्र' का समर्थन करता है।

समानता के दो प्रकार

- सरल समानता
  - आदिम युग में संभव
- जटिल समानता
  - आधुनिक युग में
    - आरक्षण के अन्दर आरक्षण.

- जटिल समानता की स्थापना पूंजीवादी व्यवस्था में संभव नहीं है, इसके लिए बहुलवाद पर आधारित "विकेन्द्रीकृत लोकतंत्रीय समाजवाद" अपनाना होगा। जहाँ रॉल्स अधिकारों पर बल देता है, वहीं वाल्जर कर्त्तव्यों पर बल देता है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

हेयक का न्याय सिद्धांत - स्वेच्छातंत्रवादी

- Law, Legislation and Liberty: The Mirage of Social Justice - 1976 (सामाजिक न्याय की मृगतृष्णा)
- हेयक प्रक्रियात्मक न्याय का कट्टर समर्थक है, अतः कहता है, "सामाजिक न्याय का विचार ही निरर्थक है, यह एक मृगमरीचिका है"। राज्य केवल स्वतंत्रता की रक्षा करे, समानता व सामाजिक कल्याण का विचार त्याग दे।
- 'जो स्वतंत्र विनिमय है, वहीं स्वच्छ विनिमय है'। (Free exchange is Fair Exchange)

नॉजिक का न्याय सिद्धांत - स्वेच्छातंत्रवादी

- Anarchy, State and Utopia - 1974 (अराजकता, राज्य व कल्पनालोक)
- नॉजिक भी लॉक से प्रभावित है। वह लॉक से 'व्यक्तिवाद' व 'सम्पति सम्बंधी' संकल्पना ग्रहण करता है।
- इन तीनों का तात्पर्य है जिस व्यक्ति ने अपनी योग्यता से धन कमाया है, उस धन पर उस व्यक्ति का पूरा हक या अधिकार है, सरकार समाज कल्याण के नाम पर उससे वह धन **अभिगृहीत** (छीन) नहीं कर सकती।

न्याय के दो तरह के सिद्धांत

साध्यमूलक सिद्धांत

यह बेन्थम के उपयोगितावाद पर आधारित है
रॉल्स की तरह–नॉजिक भी इसका घोर आलोचक है।

ऐतिहासिक सिद्धांत

अतीत की परिस्थितियों व कार्यो के आधार पर लोगो के वर्तमान अधिकार व सम्पदा अलग–2 हो सकती है। नॉजिक इसका समर्थन करता है।

अन्य नाम

1. न्याय का हकदारी सिद्धांत/आत्म स्वामीत्व का सिद्धांत
2. न्याय का अधिकारिता सिद्धांत Entitlement therory of Justice
3. न्याय का पात्रता या योग्यता सिद्धांत

नॉजिक के ऐतिहासिक न्याय सिद्धांत की तीन मान्यताएं

1. **न्यायपूर्ण अभिग्रहण का सिद्धांत:** व्यक्ति अपनी योग्यता का सही इस्तेमाल कर जितना चाहे धन कमा सकता है।
2. **न्यायपूर्ण** हस्तांतरण का **सिद्धांत:** सही तरीके से कमाये गये धन का व्यक्ति जिसे चाहे हस्तांतरण कर सकता है या खर्च कर सकता है।
3. **अन्याय** के **परिष्कार का सिद्धांत:** अगर किसी व्यक्ति ने अन्यायपूर्ण तरीके से धन कमाया है तो उसका प्रतिकार किया जा सकता है, यानि उसे छीना जा सकता है सरकार द्वारा (परिष्कार या सुधार)।

- इस प्रकार नॉजिक के न्यायपूर्ण वितरण का सूत्र बनता है- 'हरेक से उतना, जितना वह देना चाहे, तथा हरेक को उतना जितना उसे कोई देना चाहे'। 'जो जैसा चयन करें, जिसका जैसा चयन हो'।
- निष्कर्ष: नॉजिक, अहस्तक्षेपवादी (Laissze Fair) तथा रात्रि-प्रहरी राज्य का समर्थक है तथा कल्याणकारी राज्य का आलोचक। पूंजीवादी राज्य का समर्थक होने के कारण नॉजिक, व्यक्ति को राज्य का client (सेवार्थी) कहता है जो सुरक्षा के बदले Tax देता है, यानि राज्य को पुनर्वितरण का अधिकार नहीं।
- **स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद:** इसका तात्पर्य है व्यक्ति अपने शरीर व क्षमताओं का स्वामी है और इसके लिए वह समाज का ऋणी नहीं है। (हॉब्स व लॉक)
- **Book:** Possessive Individualism - Hobbes to Lock - सी.बी. मैक्फर्सन

Justice (पुनः विचार)

- Justice -> Justia -> जोड़ना या लागू बनाये रखना।
- समाज में सन्तुलन बनाए रखने के लिए दो उपाय किये जाते हैं:
  1. **दण्डित करना:** यह प्रक्रियात्मक या कानूनी न्याय का विषय है।
  2. **पुरस्कार देना:** यह सामाजिक न्याय का विषय है।
- न्याय के दो मूल तत्व होते हैं: **समानता और निष्पक्षता।**
- अरस्तु का न्याय यथास्थितिवादी है, क्योंकि:
  - ✓ वितरणात्मक न्याय में जहां लोगों को समान व **असमान** माना जाता है, उसका आधार समाज में प्रचलित प्रथाएँ व परम्पराएँ हैं क्योंकि यही **सद्गुणों** का निर्धारण करती हैं।
  - ✓ "परम्पराएँ महत्वपूर्ण होती हैं, मनुष्य के चरित्र को **बदलना** उतना सरल नहीं है जितनी सरलता से कानून **बदल** दिये जाते हैं।" - अरस्तु

रॉल्स की Theory of Justice के तीन भाग

1. **सिद्धांत**
2. **संस्थाएं (Institutions): न्याय** सामाजिक आचरण व सामाजिक संस्थाओं का प्राथमिक सद्गुण है।
3. **साध्य (Ends)**

- **Veil of Ignorance में इसका कोई ज्ञान नहीं:**
  1. विशिष्ट इच्छाएँ, झुकाव, आवश्यकताएँ, पसन्द
  2. उचित की पर्याप्त धारणा
  3. कौशल व **क्षमताएँ**
  4. इतिहास, जाति, राष्ट्रीयता, लिंग
- विवेकशील वार्ताकारों को अर्थशास्त्र व मनोविज्ञान का आरम्भिक ज्ञान **होता** है।
- **भेदभाव मूलक सिद्धांत:** आधार स्थिति वाले को अधिकतम लाभ।
  - ✓ इसका तात्पर्य **किसी** व्यक्ति को असाधारण योग्यता व परिश्रम के लिए विशेष पुरस्कार तभी न्याय संगत होगा जब उससे **दीन-हीन** व्यक्तियों को अधिकतम **लाभ** पहुंचे।

सुसान मोलर ओकिन (Susan Moller Okin)

- **Book:** Justice, Gender and Family (1991)
- **ओकिन** लिंग भेद/नारीवाद को न्याय के साथ जोड़ती है। उनके अनुसार, **न्याय** के विभिन्न

न्याय के समकालीन सिद्धांत व सिद्धांतकार

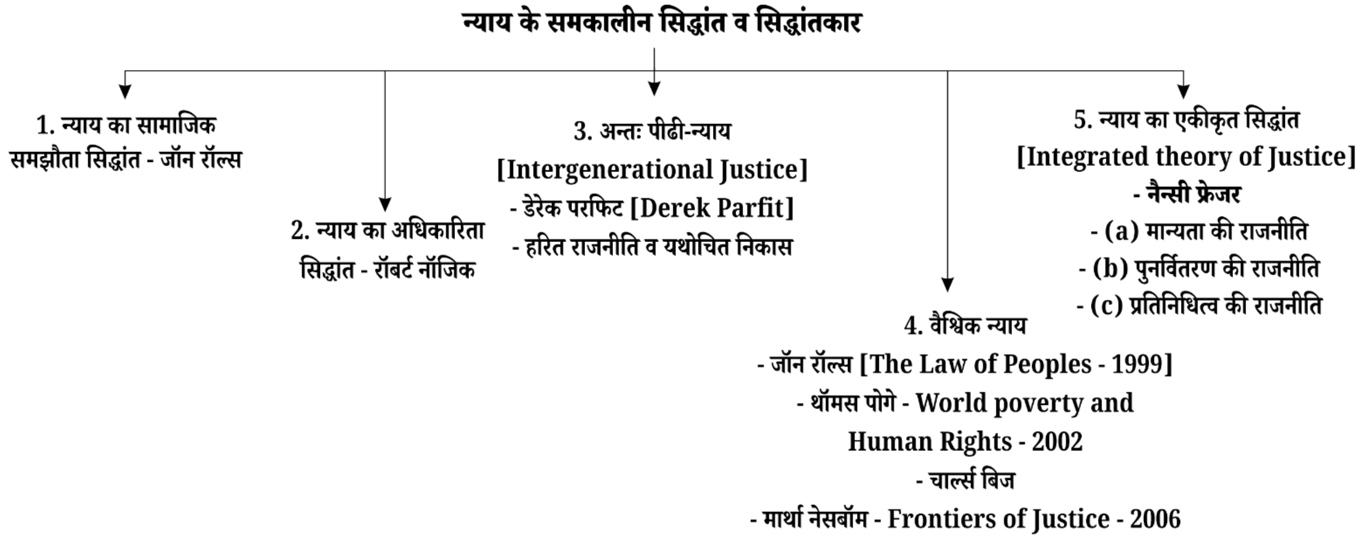

न्याय का उपाश्रित वर्गीय सिद्धांत
[Subaltern theory of Justice]
- Related to post-colonial world
- रेजीत गुहा
- पार्थ चटर्जी
- गायत्री चक्रवर्ती
- सुमित सरकार
- Third world में समाज के दो भाग हैं -
(i) विशिष्ट लोग - इनका आर्थिक, सामाजिक, राजनीति आधिपत्य है
(ii) निम्न व अधीनस्थ तबकों के लोग। - से शोषित है।

लैंगिक न्याय सिद्धांत (Gender Justice Theory)
- सुसान मॉलर ओकिन
- Book - Justice, Gender and Family - (1989)
- पारिवारिक व निजी दायरे में न्याय की स्थापना हो

परम्परागत व परा-परम्परागत न्याय
- अर्नेस्ट ब्रेख्त
- परम्परागत संस्थाओं व आधुनिक संस्थाओं द्वारा पुरःन्याय

आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में न्याय के प्रमुख मानदंड

(i) **डेजर्ट (Desert)** - [उचित रूप से लायक]

- ✓ लायक को पुरस्कार, नालायक को दण्ड।
- ✓ मुख्य समर्थक - रॉबर्ट नॉजिक।

(ii) **योग्यता (Merit)** - उदारवादी, **स्वेच्छातंत्रवादी**।

(iii) **आवश्यकता (Need)** - **मार्क्सवादी**।

(iv) **समानता (Equality)** - समाजवादी, उदार **समतावादी**, नारीवादी।

प्रसिद्ध कथन

- "न्याय वह सम्पूर्ण सद्‌गुण है जो हम आपसी व्यवहार में प्रदर्शित करते हैं।" - **अरस्तु**
- "न्याय समाज व सामाजिक संस्थाओं का सर्वप्रथम सद्‌गुण है।" - **जॉन रॉल्स**
- "न्याय के उदय का एकमात्र आधार सार्वजनिक उपयोगिता है।" - **ह्यूम**
- "न्याय में ऐसा कुछ अन्तर्निहित है जिसे करना सिर्फ सही हो और न करना सिर्फ गलत है, बल्कि जिस पर बतौर अपने नैतिक अधिकार, कोई व्यक्ति विशेष **अगले** दावा जता सकता है।" - **जे.एस. मिल**
- **पॉपर** ने प्लेटो के दर्शन के सन्दर्भ में कहा- "जब सर्वज्ञ **दार्शनिक** राजा ही इस न्याय व्यवस्था को चलाएगा तो उससे सर्वाधिकारवादी नैतिकता व सर्वाधिकारवादी न्याय प्रचलित होगा।"
- **वाल्जर** - "न्याय को अमूर्त व सार्वभौमिक सिद्धांतों के आधार पर नहीं **समझा जा सकता**।"
- **सुसान मोलर ओकिन** - "न्याय का हर वह **सिद्धांत** अधूरा है जो परिवार में असमानताओं को लेकर चुप है।"
- **मार्क्सवादी दार्शनिक जी. ए. कोहेन (G.A. Cohen)** - वितरणात्मक न्याय के लिए 'the Currency of Distributive Justice' शब्दावली का प्रयोग करते हैं।
- न्याय का **'सामर्थ्य आधारित दृष्टिकोण (Capability theory of Justice)'** के समर्थक - **अमर्त्य सेन** (Book - The Idea of Justice - 2009) व **मार्था नुसबॉम**।

अधिकार (Rights)

अधिकार (Rights)
- अर्थ
- विकास
- प्रकार
- अधिकारों के सिद्धांत

➢ **अर्थ:** अधिकार आत्म विकास के वे दावे हैं जो समाज द्वारा मान्यता प्राप्त तथा राज्य द्वारा समर्थित हों।

"अधिकार सामाजिक जीवन की वे परिस्थितियाँ हैं जो व्यक्ति के पूर्ण आत्म विकास के लिए आवश्यक हैं।" - **हेरल्ड लॉस्की**

➢ **अधिकारों के प्रकार का दो प्रकार से बंटवारा:**

<u>प्रथम बंटवारा</u>

नकारात्मक अधिकार	सकारात्मक अधिकार
राज्य द्वारा कोई प्रतिबंध नहीं उदा. – विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता	राज्य के द्वारा सहायता उदा. – शिक्षा का, स्वास्थ्य का, रोजगार का अधिकार
पूंजीवादी राज्य में	समाजवादी राज्य में

<u>कल्याणकारी राज्य</u>

➢ **अन्य प्रकार से बंटवारा**

1. **नैतिक अधिकार:** बुजुर्गों, बच्चों को देखभाल का अधिकार, शिक्षक को सम्मान पाने का अधिकार।
2. **नागरिक अधिकार (Civil Right):**
   - ✓ कानून के समक्ष समानता का अधिकार (विधि का शासन - Rule of Law)
   - ✓ जीवन का अधिकार (प्राण व दैहिक स्वतंत्रता)
   - ✓ वाणी, विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार
   - ✓ सम्पति का अधिकार व अनुबंध का अधिकार
   - ✓ धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (अन्तः करण की स्वतंत्रता)
3. **राजनीतिक अधिकार:** (लोकतंत्रीय/उदारवादी व्यवस्थाओं में)
   - ✓ वोट देने का (एक व्यक्ति, एक वोट, एक **मूल्य** - बेन्थम)
   - ✓ चुनाव लड़ने का अधिकार
   - ✓ सार्वजनिक नियुक्ति पाने का अधिकार
   - ✓ सरकार का विरोध या समर्थन करने का अधिकार
   - ✓ सार्वजनिक नीति-निर्माण व कार्यों में सहभागिता का अधिकार
4. **सामाजिक-आर्थिक अधिकार:** (समाजवादी कल्याणकारी व्यवस्थाओं में) रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार।
5. **सांस्कृतिक अधिकार:** (बहुसंस्कृतिवादी - भीखू पारीख, विल किमलिका) अपनी भाषा, लिपि व संस्कृति का अधिकार।
6. **पर्यावरणीय अधिकार:** (वर्तमान में ज्वलंत मुद्दा) शुद्ध हवा, शुद्ध पर्यावरण, परमाणु मुक्त विश्व।

अधिकारों के सिद्धांत

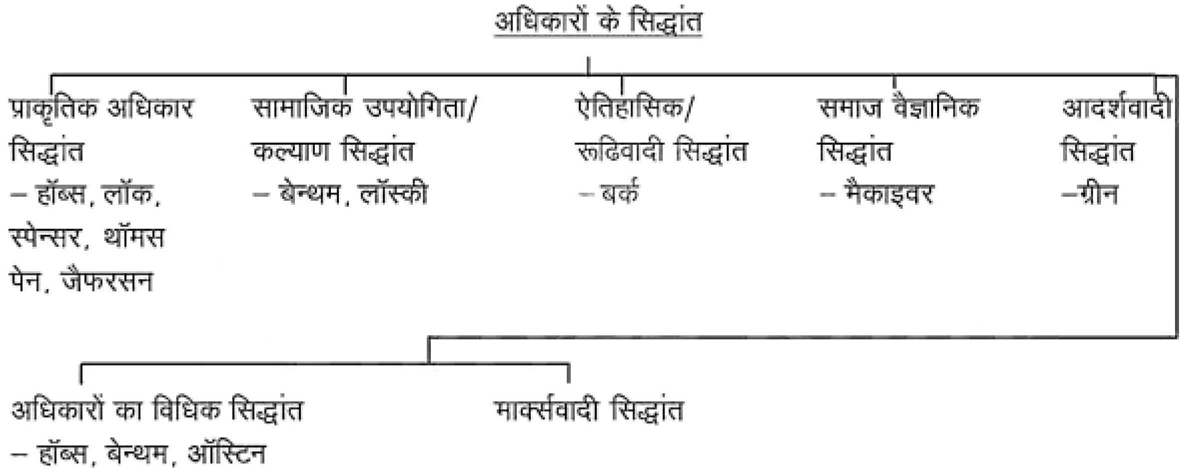

1. **प्राकृतिक अधिकारों का सिद्धांत:** ईश्वर प्रदत्त/राज्य से पूर्व/छीने नहीं जा सकते। राज्य का निर्माण अधिकारों की रक्षा हेतु।
   - ✓ **समर्थक:** हॉब्स (आत्मरक्षा का अधिकार), लॉक (जीवन, स्वतंत्रता व सम्पति का अधिकार), थॉमस पेन (Right of the man), जेफरसन ("या तो स्वतंत्रता दो या मौत दो।")
   - ✓ **तीनों क्रांतियां:** गौरवपूर्ण क्रांति (1688), **अमेरिकी** क्रांति (1776) - नारा: जीवन, स्वतंत्रता व सुख, फ्रांसीसी क्रांति (1789) - नारा: स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व।
   - ✓ **मानवाधिकार:** मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा - 10-दिसम्बर-1948।
   - ✓ **आर्थिक क्षेत्र में:** एडम स्मिथ, रिकार्डो, माल्थस।
   - ✓ **आलोचना:** कट्टर आलोचक **बेन्थम** - प्राकृतिक अधिकार संबंधी धारणा एक '**अलंकारिक** बकवास' है।
2. **अधिकारों का विधिक/कानूनी सिद्धांत:** प्राकृतिक अधिकारों का उल्टा/अधिकार ईश्वर नहीं राज्य की देन/अधिकार विधि या कानून द्वारा समर्थित/असीमित नहीं होते।
   - ✓ **समर्थक:** हॉब्स - 'जिन समझौतों के पीछे तलवार की शक्ति नहीं होती वे **शब्दाडंबर** मात्र हैं'।

     बेन्थम, ऑस्टिन – कानून,राज्य प्रभू के आदेश है। अधिकार

   - ✓ एकलवादी प्रभुसत्ता वाले विचारक: बोदां, हॉब्स, बेन्थम, ऑस्टिन।
3. **सामाजिक उपयोगिता/प्रासंगिकता/कल्याण सिद्धांत:** वे ही अधिकार मान्य जिनकी सामाजिक उपयोगिता हो।
   - ✓ **समर्थक:** उपयोगितावादी (अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख) - बेन्थम, मिल। लॉस्की - अधिकारों की व्यवस्था समाज कल्याण से जुड़ी है।
   - ✓ 'किसी भी राज्य की पहचान उन अधिकारों से होती है जिन्हें वह कायम रखता है।' - **लॉस्की**
4. **अधिकारों का ऐतिहासिक या रूढीवादी सिद्धांत (एडमंड बर्क):** अधिकार इतिहास की देन हैं। जब रीति-रिवाज या परम्परा लम्बे समय तक प्रचलन में रहते हैं तो वे स्थिर हो जाते हैं तथा अधिकार बन जाते हैं।
   - ✓ **उदाहरण:** पत्नी-पति के दाम्पत्य जीवन संबंधी अधिकार।
   - ✓ इस सिद्धांत में अधिकारों को सामाजिक मान्यता की तो आवश्यकता होती है पर राज्य द्वारा मान्यता आवश्यक नहीं। उदा. U.K.
   - ✓ **आलोचना:** सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, दास प्रथा लम्बे समय तक प्रचलन में रहे, अधिकार का रूप धारण कर लें तो यह अनुचित है।

5. **समाज वैज्ञानिक सिद्धांत - मैकाइवर:** वे **रीति-रिवाज** जो समाज द्वारा मान्यता प्राप्त हों तथा जिन्हें राज्य कानून में बदल दे, अधिकार बन जाते हैं।
6. **अधिकारों का आदर्शवादी या नैतिक सिद्धांत - ग्रीन:** 'मानव की चेतना स्वतंत्रता की मांग करती है, स्वतंत्रता में अधिकार निहित हैं तथा अधिकार राज्य की मांग करते हैं।' - **ग्रीन**
   - ✓ **Book:** Lectures on the principles of political obligation - ग्रीन
   - ✓ 'अधिकार मानव के आन्तरिक विकास की **बाह्य** दशाएँ हैं।' - **ग्रीन**
7. **अधिकारों का मार्क्सवादी सिद्धांत:** 'किसी भी राज्य में, किसी भी युग में प्रचलित अधिकार प्रभुत्वशाली वर्ग (Dominant class) के अधिकार होते हैं।' - **(मार्क्स)**
   - ✓ पूंजीवादी व्यवस्था तथा सर्वहारा के अधिनायक तंत्र (**आरंभिक** दौर) में अधिकारों के सूत्र- 'हरेक से अपनी क्षमता के अनुसार, हरेक को अपने कार्य के अनुसार।'
   - ✓ 'हरेक से अपनी क्षमता के अनुसार, हरेक को अपनी आवश्यकता के अनुसार।' (साम्यवाद में)

अधिकार (Rights) - अतिरिक्त बिंदु

- ➢ अधिकारों का जन्म समाज में होता है।
- ➢ **इनका** कर्तव्यों के साथ घनिष्ठ संबंध है। ये दायित्वों के साथ जुड़े हैं।
- ➢ अधिकार स्वार्थमय दावा नहीं, सार्वजनिक हित के लिए होते हैं।
- ➢ राज्य अधिकारों का निर्माता नहीं है, वह केवल मान्यता देता है।
- ➢ अधिकार निश्चित होने चाहिए, उनकी **स्पष्ट** व्याख्या होनी चाहिए।
- ➢ अधिकार परिवर्तनशील होते हैं, आवश्यकतानुसार बढ़ते रहते हैं।
- ➢ "अधिकार राज्य से पूर्व भी होते हैं। निरंकुशतावाद से भी अधिक मजबूत हैं।" - **नॉजिक** (Anarchy, State and Utopia - 1974) का प्रथम वाक्य - "व्यक्तियों के **पास** अधिकार हैं और कुछ **ऐसी** वस्तुएं हैं जिनको कोई व्यक्ति या समूह छीन नहीं सकता बिना उनके अधिकार का **उल्लंघन** किए।"

चेक विद्वान कारेल वसाक (Vasak)

↓

मानव अधिकारों की तीन पीढ़ियाँ (Three Generations of Human Rights)

↓ ↓ ↓

प्रथम पीढ़ी: नागरिक - राजनीतिक अधिकार | **दूसरी पीढ़ी: सामाजिक-आर्थिक अधिकार** | **तीसरी पीढ़ी: सामूहिक विकासात्मक अधिकार (उदा: सांस्कृतिक अधिकार, लैंगिक अधिकार)**

- ➢ शुरुआती दो पीढ़ियों वाले अधिकार - राज्य के विरुद्ध व्यक्ति के अधिकार थे, जबकि तीसरी पीढ़ी के अधिकार राज्य के विरुद्ध समुदायों के अधिकार हैं।
- ➢ संस्कृति संबंधी सामुदायिक अधिकारों के लिए बहुसंस्कृतिवादी विचारक **भीखू** पारीख 'मनुष्य की सामूहिकताओं' (**अवधारणा**) की **अवधारणा** देते हैं। सांस्कृतिक अधिकार **किसी** एक व्यक्ति नहीं **बल्कि** समुदाय द्वारा धारण किये जाते हैं।

अधिकारों का बर्क-पेन विवाद

- ➢ **युवाल लेविन (Yuval Levin) - Book - The Great Debate: Edmund Burke, Thomas Paine and the Birth of Right and Left (2014)**
- ➢ **एडमंड बर्क** ने अपनी पुस्तक - Reflection on the Revolution in France (1790) में **फ्रांसीसी क्रांति** की आलोचना करते हुए लिखा, "**फ्रांस की राज्य क्रांति** का आधार काल्पनिक अधिकार है जबकि ब्रिटिश रक्तहीन क्रांति ऐतिहासिक अधिकारों पर आधारित थी।"

- बर्क ने 'प्राकृतिक अधिकारों' को '**अराजकतावादी** धारणा' (Anarchical Concept) कहा है।
- बर्क ऐतिहासिक अधिकार, रुढियों, परम्पराओं, **यथास्थितिवाद** व वंशानुगत **श्रेणीबद्धता** के समर्थक थे।
- कार्ल पॉपर, **माइकल ओकशॉट**, F.A. हेयक बर्क से काफी प्रभावित हैं।
- **थॉमस पेन:**
  - ✓ थॉमस पेन ने बर्क की पुस्तक के विरोध में **अगले ही साल** - "Rights of Man" (1791) लिखी।
  - ✓ पेन ने बर्क के **तर्कों** का खण्डन करते हुए प्राकृतिक अधिकारों व व्यक्तिगत अधिकारों का समर्थन किया। वंशानुगत व राजतंत्रीय प्रणालियों के विरुद्ध पेन ने लोकप्रिय **संप्रभुता** का समर्थन किया। **पेन** ने सामाजिक कल्याण को भी अधिकारों के साथ जोड़ा।
  - ✓ पेन का तर्क था- "बर्क मृतक के प्राधिकार को जीवित लोगों की स्वतंत्रता व अधिकारों **पर** स्थान देना चाहते हैं।"
- **बर्क-पेन विवाद का मुख्य बिंदु था अधिकारों के स्रोत।**

प्राकृतिक अधिकार सिद्धांत की आलोचना

- **रिची (Ritchie)** का मानना है कि प्राकृतिक अधिकारों के जन्मदाता लॉक या रूसो नहीं, बल्कि 'प्रोटेस्टेंट क्रांति' है।
- **बेंथम** - प्राकृतिक अधिकार - 'वैसाखियों पर टिकी बकवास' (Nonsense upon stilts), 'अराजक भ्रम' (Anarchical Fallacies), 'निरे-निरर्थक' (simple nonsense) हैं।
- **T.H. ग्रीन** सामाजिक समझौताकारों के प्राकृतिक अधिकारों की धारणा को त्याज्य बताता है। ग्रीन के अनुसार - "प्राकृतिक अधिकार ऐसा अधिकार है जो समाजहीन प्राकृतिक अवस्था में पाया जाता है, यह शब्दों का पारस्परिक विरोध है।"
- **अधिकारों का सामाजिक कल्याण या उपयोगिता सिद्धांत**
  - ✓ **समकालीन समर्थक:** रोस्को पाउण्ड, जो शैफी, जॉन ब्रॉन न्यूमैन।
- **अधिकारों का Libertarian सिद्धांत - नॉजिक**
  - ✓ सम्पत्ति का अधिकार असीम व सर्वप्रमुख मानव अधिकार है।
  - ✓ आत्म स्वामीत्व का अधिकार प्राकृतिक अधिकार।
  - ✓ व्यक्ति के अधिकार ही नैतिकता का एकमात्र आधार हैं।
  - ✓ जब तक एक-दूसरे के अधिकारों का अतिक्रमण नहीं होता, प्रत्येक कार्य नैतिक दृष्टि से उचित है।
- **ड्वॉर्किन - Book** - Taking Rights Seriously - 1977
  - ✓ व्यक्तिगत अधिकार व्यक्तियों के पास 'राजनीतिक तुरूप' (Political Trumps) की तरह होते हैं।
- **माइकल वाल्जर** (समुदायवादी) - Sphere of Justice - 1983
  - ✓ अधिकारों के सार्वभौमिक सिद्धांत की खोज एक भ्रमित खोज है।

स्वतंत्रता (Liberty)

अर्थ

- Liberty शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'Liber' से बना है, जिसका तात्पर्य है- 'प्रतिबंधों का अभाव'।
- अगर हम स्वतंत्रता को 'प्रतिबंधों के अभाव' के रूप में स्वीकार करें तो यह प्राकृतिक स्वतंत्रता होगी जिसका तात्पर्य होगा जंगल की स्वतंत्रता। स्वतंत्रता का यह विचार स्वीकार करते ही हम हॉब्स द्वारा कल्पित प्राकृतिक अवस्था की स्थिति में पहुंच जाएँगे।
- पर **D.D मैक्कीन** के अनुसार, 'स्वतंत्रता सभी प्रतिबंधों का अभाव नहीं बल्कि अतार्किक प्रतिबंधों का अभाव है'।
- **L.T. हॉबहाउस** - 'सबको स्वतंत्रता तभी प्राप्त हो सकती है, जब सब पर कुछ न कुछ प्रतिबंध लगा दिये जाएँ'।
- **सीले** - 'स्वतंत्रता, अतिशासन का विलोम है'।

स्वतंत्रता, सत्ता व स्वच्छन्दता: पारस्परिक संबध

स्वतंत्रता, सत्ता व स्वच्छन्दता – पारस्परिक संबध

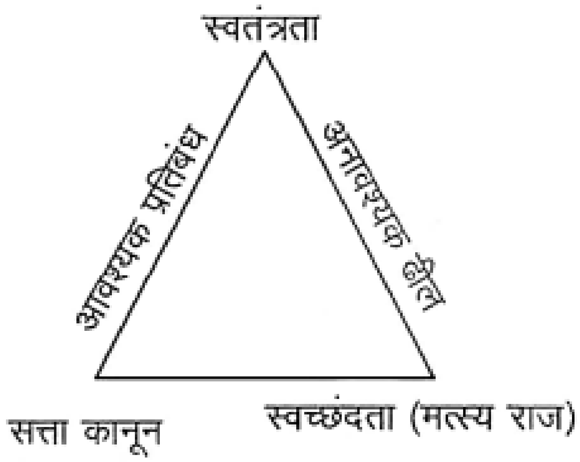

स्वतंत्रता के प्रकार

स्वतंत्रता के प्रकार

- प्राकृतिक स्वतंत्रता
  - प्रतिबंधों का अभाव
  - प्रत्येक मनुष्य विवेकशील
- सामाजिक/नागरिक स्वतंत्रता
  - युक्तियुक्त प्रतिबंध
  - – विचार–अभिव्यक्ति की
  - – जीवन की व देह की स्वतंत्रता
  - – अन्ताकरण की
  - – सम्पति की व अनुबंध की स्वतंत्रता
  - – व्यवसाय चूनने की
  - – संघ बनाने की
  - – विचार व अभिव्यक्ति स्वतंत्रता
- राजनीतिक स्वतंत्रता
  - – मतदान की
  - – चुनाव लड़ने की
  - – शासन आलोचना की
  - – शासन कार्य में भागीदारी की स्वतंत्रता
- राष्ट्रीय स्वतंत्रता
- आर्थिक स्वतंत्रता
- घेरलु स्वतंत्रता
  - L.T हॉबहाउस
  - Book - एलीमेन्ट्स ऑफ सोशियल जस्टिस – 1928

toppersnotes
Unleash the topper in you

स्वतंत्रता के रूप

(A) नकारात्मक/औपचारिक/प्रक्रियात्मक स्वतंत्रता

– बन्धनों का अभाव
– समर्थक शासन व्यवस्था–उदारवाद–पूंजीवाद
– समर्थक विचार

(i) परम्परागत (Classical)/नकारात्मक उदारवादी
– लॉक, स्पेन्सर, मिल, एड्स, स्मिथ, रिकार्डो, डी टॉकविले, लॉर्ड एक्टन

(ii) स्वेच्छातंत्रवादी
हेयक नांजिक, बर्लिन, फ्रीडमैन

(B) सकारात्मक/औपचारिक/तात्विक स्वतंत्रता

– युक्तियुक्त प्रतिबंध
– समाजवादी, लोककल्याणकारी
– समर्थक विचार

(i) सकारात्मक/आधुनिक उदारवादी
– लॉस्की, टॉनी, कीन्स, हॉबहाउस, मैकाइवर

(ii) आदर्शवादी
– हींगल, कान्ट, ग्रीन, रूसो

(iii) समतावादी
– जॉन रॉल्स, C.B मैकफर्सन, अमृत्य सेन

(iv) मार्क्सवादी/नवमार्क्सवादी

नकारात्मक उदारवादी

A. लॉक 'Two Treatises on Govt' - 1690

✓ 'जहाँ, विधि नहीं वहां स्वतंत्रता नहीं'

✓ तीन प्राकृतिक स्वतंत्रताएं/अधिकार - जीवन, स्वतंत्रता व सम्पति

B. स्पेन्सर - Man v/s State

✓ डार्विन के जीव विज्ञान से सम्बन्धित सिद्धांत 'योग्यत्तम की उत्तरजीविता' को स्पेन्सर ने सामाजिक क्षेत्र में लागू किया।

✓ 'राज्य इसलिए विद्यमान है क्योंकि समाज में अपराध विद्यमान है। यदि समाज में अपराध नहीं होगा तो राज्य की आवश्यकता भी नहीं होगी।' - **स्पेन्सर**

✓ **रात्रि प्रहरी राज्य** - यह केवल तीन कार्य करता है- बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा, शांति व व्यवस्था बनाए रखना तथा न्याय। रात्रि प्रहरी राज्य लोक-कल्याणकारी राज्य का उल्टा है।

Unleash the topper in you

C. एडम स्मिथ Wealth of Nation - 1776

✓ **एडम** स्मिथ, डेविड रिकार्डो तथा माल्थस आर्थिक क्षेत्र में 'अहस्तक्षेपवादी' (Laissez Faire) नीति के समर्थक हैं।

✓ **एडम** स्मिथ ने 'अदृश्य हाथ' (Invisible Hand) का विचार दिया।

D. जे.एस. मिल Essay on Liberty - 1859

हानि का सिद्धांत

स्वतंत्रता

- विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
  पूर्णतः अप्रतिबंधित
- कार्य स्वतंत्रता
  - स्वविषयक
    बंधनो का अभाव
  - पर–विषयक
    – युक्तियुक्त प्रतिबंध
    – हानि का सिद्धांत

- ✓ मिल शुरूआत में नकारात्मक उदारवादी था पर 1867 में जब उसने 'Principles of Political Economy' (1848) का चौथा संस्करण लिखा, उसमें उसने सकारात्मक उदारवाद का समर्थन किया।
- ✓ 'व्यक्ति अपने ऊपर, अपने तन व मन के ऊपर सर्वेसर्वा है, यानि व्यक्ति अपने शरीर व मन का स्वामी है।' - J.S. मिल
- ✓ 'स्वतंत्रता को सीमित करने का सबसे **बड़ा** माध्यम है- बहुमत समाज, राज्य या सरकार नहीं।' - **J.S मिल**
- ✓ **बार्कर** - 'मिल खोखली स्वतंत्रता का मसीहा है।'

स्वेच्छातंत्रवादियों (Libertarianism) के स्वतंत्रता सम्बंधी विचार

(i) F.A हेयक - Book

1. The Constitution of Liberty - 1960
2. Law, Legislation and Liberty -1973
3. Road to Serfdom - 1944 (दासता के पथ पर)

- ✓ **व्यक्तिगत स्वतंत्रता (Individual Freedom):** 'मनुष्य को स्वतंत्रता तब प्राप्त होती है जब वह किसी दूसरे की अनर्गल इच्छा के द्वारा विवश या बाध्य न हो'।
- ✓ स्वतंत्रता का मूल अर्थ है - प्रतिबंध का अभाव।

'स्वतंत्रता का समान वितरण नहीं किया जा सकता। समाज में सबको थोड़ी-थोड़ी स्वतंत्रता मिलने से अच्छा है, कुछ लोगों को पूरी स्वतंत्रता प्राप्त हो, चाहे बाकी लोग उससे वंचित रह जाएँ।' - **हेयक**

- ✓ (मीठी रोटी के टुकड़े की बजाय किसी को पूरी रोटी दे दी जाए ताकि किसी एक का तो पेट भरे।)
- ✓ हेयक के घोर आलोचक क्रिश्चियन बे ने उसे - "विशेष वर्ग का विशेष अधिवक्ता कहा है" तथा हेयक के दर्शन को '**रूढ़िवादी** समाज दर्शन' तथा 'चिन्तन की बन्द प्रणाली' कह कर आलोचना की है।
- ✓ **हेयक** - स्वतंत्रता का तात्पर्य है 'विकल्पों की उपलब्धि'। विकास के जितने ज्यादा विकल्प, उतनी ज्यादा स्वतंत्रता। विकल्पों को बन्द कर दिया जाए तो उसी को 'गुलामी का मार्ग' कहते हैं।

(ii) मिल्टन फ्रीडमैन - Capitalism and Freedom - 1962

- ✓ फ्रीडमैन, स्पेन्सर के राजनीतिक आर्थिक दर्शन का अनुसमर्थक है, यानि सरकार असहाय, अनाथ व गरीबों के सामाजिक कल्याण का कार्य न करे।

"स्वतंत्रता का अर्थ है किसी व्यक्ति के साथ **रहने** वाले उसे किसी बात के लिए विवश न कर सकें।"

(iii) आइजिया बर्लिन - Two Concepts of Liberty - 1958, Four Essays on Liberty - 1969

स्वतंत्रता के दो प्रकार

- सकारात्मक
- नकारात्मक (राजनीतिक स्वतंत्रता)

- ✓ "राज्य केवल नकारात्मक स्वतंत्रता की रक्षा कर सकता है, सकारात्मक स्वतंत्रता उसके कार्यक्षेत्र में नहीं आती।"
- ✓ **"जो जैसा है, वैसा है। स्वतंत्रता, स्वतंत्रता है, वह समानता, न्याय, संस्कृति या मानवीय सुख की पर्याय नहीं हो सकती।"** - बर्लिन
- ✓ "अगर कोई व्यक्ति बाज की तरह उड़ नहीं सकता या व्हेल की तरह तैर नहीं सकता तो यह उसकी अपनी कमी है।" - बर्लिन
- ✓ (यानि अपनी आकांक्षाएं या स्वप्न पूरे करने की क्षमता या अक्षमता व्यक्ति का स्वयं का निजी मामला है, उसमें राज्य क्या करे।)
- ✓ **स्वतंत्रता की इकहरी संकल्पना:** 'रॉल्स' व मेकलॉवेन जैसे विचारकों ने स्वतंत्रता के सकारात्मक व नकारात्मक विभाजन को अस्वीकार कर दिया।

तात्विक/सकारात्मक स्वतंत्रता के समर्थक

- अटलांटिक चार्टर में U.S.A के राष्ट्रपति **फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट** ने चार प्रकार की स्वतंत्रताओं, जिन्हें 'चार मुक्तियाँ' भी कहा जाता है, का वर्णन किया-
  (i) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
  (ii) उपासना की स्वतंत्रता
  (iii) भय से स्वतंत्रता
  (iv) अभाव से स्वतंत्रता
- पाकिस्तान के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री महबूब उल हक व भारतीय **अमर्त्य सेन** (कल्याणकारी अर्थशास्त्र) द्वारा प्रेरित UNDP की मानव विकास रिपोर्ट का आधार भी सकारात्मक स्वतंत्रता है।

आधुनिक उदारवादियों के स्वतंत्रता संबंधी विचार

(i) सकारात्मक स्वतंत्रता के **पक्षधर**
(ii) स्वतंत्रता पर युक्तियुक्त प्रतिबंध आवश्यक
(iii) बाजार पर यानि सम्पति पर नियंत्रण आवश्यक।

- **लॉस्की - "A Grammar of Politics' – 1925** "आर्थिक स्वतंत्रता के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता बेकार है।"
- **जवाहर लाल नेहरू** "भूखे मनुष्य के लिए वोट का कोई महत्व नहीं है।"
- **बार्कर** "स्वतंत्रता का तात्पर्य प्रतिबंधों का अभाव नहीं है, जैसे कुरूपता का अभाव सुन्दरता नहीं है।"

आदर्शवादी विचारक

1. **हीगेल**
   - ✓ 'राज्य की आज्ञा का पालन करना ही स्वतंत्रता है।'
   - ✓ 'जो जेल जा रहा है, वह स्वतंत्र हो रहा है।'
2. **ग्रीन**
   - ✓ 'स्वतंत्रता उन कार्यों को करने तथा उपभोग करने की शक्ति है, जो कार्य करने तथा उपभोग करने योग्य हैं।'
   - ✓ 'मानव चेतना स्वतंत्रता चाहती है, स्वतंत्रता में अधिकार निहित हैं तथा अधिकार राज्य की मांग करते हैं।'
3. **रूसो**
   - ✓ 'मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ किन्तु सभी जगह जंजीरों में जकड़ा हुआ है।'
   - ✓ **Paradox of Freedom** - रूसो की स्वतंत्रता की संकल्पना को 'विरोधाभासी संकल्पना' कहा जाता है- 'जो व्यक्ति सामान्य इच्छा (General will) का पालन नहीं करेगा, उस व्यक्ति को स्वतंत्र होने के लिए बाध्य किया जायेगा'।
4. **कांट**
   - ✓ 'संकल्प की स्वतंत्रता' **नैतिकता** का आधार है।
   - ✓ (विकल्प/संकल्प/ एक भूखा व्यक्ति रोटी चुराता है तो यह अनैतिकता नहीं है, क्योंकि उसके पास और कोई विकल्प नहीं था। हाँ, पेट भरा हुआ व्यक्ति ऐसा करता है तो यह अनैतिक कृत्य है।)

समतावादी विचारक

1. **जॉन रॉल्स** - स्वतंत्रता की इकहरी संकल्पना, यानि स्वतंत्रता नकारात्मक या सकारात्मक नहीं होती।
2. **अमृत्य सेन** - Book "Development As Freedom" 1999
   - ✓ सेन ने स्वतंत्रता का तात्पर्य व्यक्ति की 'क्षमताओं का विकास' माना है। (यानि व्यक्ति को मछली देने की बजाय मछली का शिकार करना सिखाया जाए।)
3. **सी.बी. मैक्फर्सन** - "Democratic Theory' - 1973
   - ✓ **सृजनात्मक स्वतंत्रता (Creative Freedom)** का विचार: "मनुष्य की विकासात्मक शक्ति का विस्तार ही उसकी 'सृजनात्मक स्वतंत्रता' की कुंजी है।"